संस्कृत ([illegible])
बी.ए. (प्रथम खण्ड)

डॉ. [illegible]
अतिथि [illegible]
[illegible]

लघुसिद्धान्तकौमुदी (संज्ञाप्रकरण)-

पूर्व में बताया गया है कि किस प्रकार महेश्वर सूत्रों के अन्तिम वर्ण की 'इत्' संज्ञा अर्थात् लोप कर प्रत्याहार बनाया जाता है एवं उसका उपयोग सूत्रों में होता है।

हलन्त्यम् (सूत्र) - 'उपदेशे ऽन्त्यं हलित् स्यात्' अर्थात् 'उपदेश' अवस्था में जो अन्त्य 'हल् (व्यञ्जन वर्ण)' हो, वह 'इत्' संज्ञक होता है। 'उपदेश' का अर्थ किया गया है -

'धातुसूत्रगणोणादिनामलिङ्गानुशासनम्।
आगमाः प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥'

अर्थात् धातु, सूत्र, गण, उणादि, नामलिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्ययादेश उपदेश कहे जाते हैं। परन्तु उपदेश की यह परिभाषा काफी विस्तृत है अतः संक्षेप में कहा जाता है कि 'त्रिमुनि' अर्थात् पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि का आद्य उच्चारण 'उपदेश' के

नाम से कहा जाता है। इस प्रकार यह शब्द रूढ़ हो गया है।

'हल्' कहने से तात्पर्य है कि 'ह' से प्रारम्भ कर 'हल्' के 'ल्' तक 'हल्' कहा जाता है। 'हल्' का प्रारम्भ 'हयवरट्' के 'ह' से होता है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है 'हयवरट्' का 'ट्', 'लण्' का 'ण्' 'ञमङणनम्' का 'म्' आदि भी इत्संज्ञा अर्थात् लोप हो जाता है अतः 'हल्' से तात्पर्य इन वर्णों से है-

क, ख, ग, घ, ङ
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, त, ध, न
ह, य, व, र, ल, श, ष, स

अर्थात् सभी व्यंजन वर्ण

Rahul Rawle